ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2025; 11(1): 169-172
www.allresearchjournal.com
Received: 23-11-2024
Accepted: 27-12-2024

प्रशान्त कुमार वत्स
शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. विवेक कुमार मिश्रा
प्राचार्य, मनोज जैन मेमोरियल कॉलेज, सतना, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
प्रशान्त कुमार वत्स
शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सतना जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में हो रहे संवेगात्मक विकास का अध्ययन

प्रशान्त कुमार वत्स, विवेक कुमार मिश्रा

सारांश
प्रस्तुत शोध कार्य में माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में संवेगात्मक विकास का अध्ययन सुनियोजित रूप से किया गया गया है। न्यादर्श में सम्भाव्य न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है इसके लिए माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों द्वारा आंकड़ों का संग्रहण किया गया है। संवेगात्मक परिवर्तनों के प्रभाव को जानने के लिए डॉ. अनीता सोनी एवं डॉ. अशोक सोनी द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा 'टी' मूल्य का उपयोग किया गया है। परिणाम में पाया गया है कि माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक विकास में सार्थक अन्तर पाया गया है, जबकि बालक और बालिकाओं के संवेगात्मक विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

कूटशब्दः सतना जिला, माध्यमिक स्तर, बालक–बालिका एवं संवेगात्मक विकास

1. प्रस्तावना
शिक्षा मानव के विकास की आवश्यकता है, जिसके अभाव में व्यक्ति का जीवन देश और समाज को गतिविधियों से अधूरा रह जाता है जिसके परिणामस्वरूप वह व्यक्तिगत उन्नति के साथ ही सामाजिक क्षेत्र में अपनी सक्रियता खोकर पिछड़ेपन का शिकार हो जाता है। अतः शिक्षा ही वह सषक्त साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति जीवन की प्रगति करते हुए सामाजिक व आर्थिक प्रगति के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

समाज के लिए शिक्षा बहुत अनिवार्य है। कोई भी सभ्य समाज शिक्षा के बिना कभी प्रगति नहीं कर सकता है। एक शिक्षित व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र ही उन्नति और प्रगति कर पाने के योग्य होता है। प्रत्येक देश अपनी विशिष्ट शिक्षा प्रणाली विकसित करता है ताकि उसकी सामाजिक व सांस्कृतिक अस्मिता को अभिव्यक्ति मिल सके और वह भविष्य की चुनौतियों का सामना कर सकें। शिक्षा प्रणाली का स्वरूप इस प्रकार का होना चाहिए कि जिससे किसी देश के नागरिकों को अनिवार्य एवं निशुल्क शिक्षा एवं स्वरोजगार परक शिक्षा जीवन व्यतीत करने वाली प्राप्त हो सकें तथा समाज के सभी लोग इससे लाभान्वित हो सके। इसके लिए शिक्षा को आवश्यकता के रूप में प्रत्येक बालक तक उपलब्ध किया जाना चाहिए। जिससे बालकों को शिक्षा प्राप्त करने में किसी प्रकार की कठिनाई न हो।

बाल्यावस्था का सांवेगिक विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान होता है। इस अवस्था में बालक के संवेगों की अभिव्यक्ति में सामजिकता का भाव प्रस्फुटित होने लगता है, इससे संवेगों की उग्रता में कमी आती है। सामाजीकरण के फलस्वरूप वह संवेगों का दमन करने का प्रयास करता है अथवा विशिष्ट रूप में अभिव्यक्त करता है।

सभी संवेग चाहें वे सुखकर हों अथवा दुखकर, सामाजिक अन्तः क्रिया को बढ़ावा देते है। इससे व्यक्ति अपने व्यवहार को सामाजिक आकांक्षाओं तथा मानकों के अनुरूप सुधारने का प्रयास करते है। संवेग जो बाल्यावस्था में बहुत तीव्र होते है, बालक के बड़े होने पर उनकी तीव्रता कम होती है एवं जो संवेग पहले दुर्बल होते है, उनकी तीव्रता बढ़ जाती है। यह वदलाव अंशतः बालक के बौद्धिक विकास के कारण एवं अशंतः बालक की रूचियों एवं मूल्यों में परिवर्तन के कारण होता है।

मनुष्य के जीवन काल में प्रारंभिक अवस्था से लेकर अवस्थाओं में क्रमशः शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक परिवर्तन होते है, यह प्रकृति का नियम है, जीवन के किशोरावस्था में इस परिवर्तनों में तीव्रता अपेक्षाकृत अधिक होती है। समान्यतः जब बालक–बालिका माध्यमिक स्तर के शिक्षा स्तर में प्रवेश लेते हैं तब उनमें किशोरावस्था प्रारंभ हो चुकी होती है।

इन विद्यार्थियों में शारीरिक व मानसिक परिवर्तनों के अपेक्षा संवेगात्मक परिवर्तन ज्यादा दृष्टिगोचर होते हैं।

2. अध्ययन की आवश्यकता

प्रस्तावित शोध समस्या जो कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में हो रहे संवेगात्मक विकास का अध्ययन इसमें शोध की आवश्यकता व महत्व गहन रूप से है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले किशोर बालक–बालिकाएं अपनी संवेगात्मक बुद्धि का उपयोग करके किस प्रकार अपने आपको समायोजित करते हैं व अपने संवेगात्मक बुद्धि के द्वारा कठिन से कठिन परिस्थितियों में अपने संवेग को नियंत्रित करते हैं और समस्या का हल ढूढ़ लेते है। अतः प्रश्न यह उठता है कि क्या माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर समान रहता है अथवा इसमें कोई अंतर पाया जाता है एवं उनके परिवेश का क्या प्रभाव पड़ता है। प्रस्तुत समस्या के अन्तर्गत कक्षा 9 व 10वीं के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक विकास का अध्ययन सुनियोजित रूप से किया गया है।

3. उद्देश्य

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में हो रहे संवेगात्मक विकास का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में हो रहे संवेगात्मक विकास का अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में हो रहे संवेगात्मक विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में हो रहे संवेगात्मक विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र सतना जिला है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – सतना (सोहावल), मझगवाँ, रामपुर बघेलान, नागौद, उचेहरा, अमरपाटन, रामनगर एवं मैंहर है। अतः जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में हो रहे संवेगात्मक विकास का अध्ययन किया गया।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधिः** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में हो रहे संवेगात्मक विकास का अध्ययन करने के लिए डॉ. अनीता सोनी व डॉ. अशोक शर्मा द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है। उपकरण की विश्वसनीयता 0.81 है तथा इसकी वैधता 0.72 है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से आर्येन्दु, आहुजा (2001)[1], ऐरिक और राबर्ट (1988)[2], चौबे, एस.पी. (2003)[3], खातुन, रईसा, (2020)[4], सिंह, शिव प्रकाश (2007)[5] एवं पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार (2007)[6], पाठक, पी.डी. (2007)[7] एवं झाझडिया, राजेन्द्र प्रसाद (2015)[8] ने शोध विधि एवं संवेगात्मक विकास से सम्बन्धित कार्य किये है।

8.1 समष्टि व प्रतिदर्शः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में हो रहे संवेगात्मक विकास का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विकासखण्ड से एक शहरी व एक ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों कुल 16 माध्यमिक विद्यालय, प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र एवं 10 छात्राएं कुल 320 छात्रों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से अध्ययन हेतु किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

9. सतना जिले का सामान्य परिचय

सतना जिला भारत के मानचित्र में 23.58º-25.12º उत्तरी अक्षांश तथा 80.12º-81.23º पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 7424 वर्ग कि.मी. है जो प्रदेश के क्षेत्रफल का 1.78 प्रतिशत है। सतना मध्य रेल्वे के इलाहाबाद और कटनी जंक्शन के बीच एक प्रमुख रेल्वे स्टेशन एवं व्यापारिक, औद्योगिक नगर है। जिले में एक नगर निगम (सतना), एक नगरपालिका (मैहर) के अतिरिक्त 9 नगर पंचायते क्रमशः नागौद, अमरपाटन, रामपुर बघेलान, कोठी, जैतवारा, कोटर, विरसिंहपुर, उचेहरा एवं चित्रकूट हैं।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1: शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में हो रहे संवेगात्मक विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक 1: शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में हो रहे संवेगात्मक विकास का अध्ययन

समूह	छात्रों की संख्या	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	df	't' मूल्य	परिणाम
शहरी	160	42.58	10.23	318	5.31	0.01 व 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक
ग्रामीण	160	35.79	12.47			

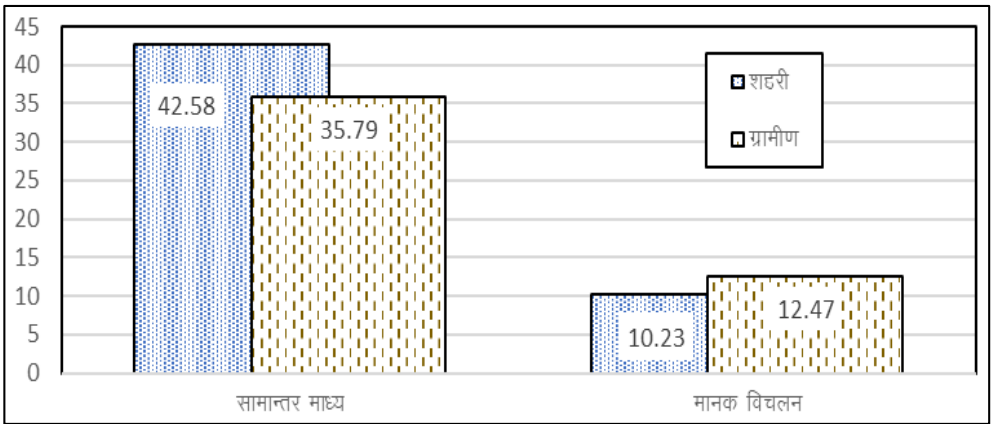

आरेख 1: शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में हो रहे संवेगात्मक विकास का अध्ययन

10.1 विश्लेषण

उपरोक्त सारणी एवं सांख्यिकीय विश्लेषण में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में हो रहे संवेगात्मक विकास का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में हो रहे संवेगात्मक विकास का समान्तर माध्य 42.58 तथा मानक विचलन 10.23 है। ग्रामीण क्षेत्र में समान्तर माध्य 35.79 तथा मानक विचलन 12.47 है।

शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में हो रहे संवेगात्मक विकास का अध्ययन सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनों समूहों में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त 't ' का मान 5.31 है।

10.2 व्याख्या

318 df. पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान 5.31 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से अधिक है।

सारणी एवं सांख्यिकीय विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में हो रहे संवेगात्मक विकास में सार्थक अन्तर है।

अतः परिकल्पना निरसित होती है।

परिकल्पना क्र. 2: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में हो रहे संवेगात्मक विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक 2: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में हो रहे संवेगात्मक विकास का अध्ययन

समूह	छात्रों की संख्या	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	df	't' मूल्य	परिणाम
बालक	160	31.28	8.47	318	1.86	0.01 व 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक नहीं है
बालिकाएं	160	29.45	9.06			

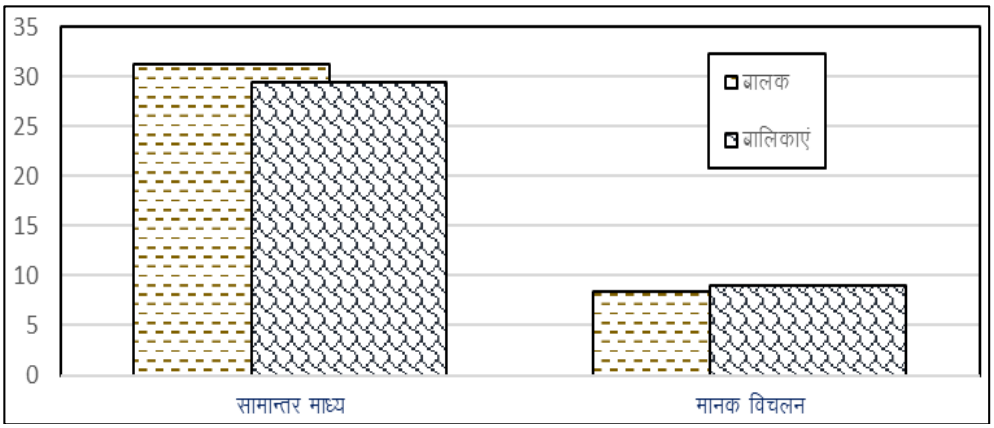

आरेख 2: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में हो रहे संवेगात्मक विकास का अध्ययन

10.3 विश्लेषण

उपरोक्त सारणी एवं सांख्यिकीय विश्लेषण में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में हो रहे संवेगात्मक विकास का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् बालकों में हो रहे संवेगात्मक विकास का समान्तर माध्य 31.28 तथा मानक विचलन 8.47 है। बालिकाओं क्षेत्र में समान्तर माध्य 29.45 तथा मानक विचलन 9.06 है।

शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में हो रहे संवेगात्मक विकास का अध्ययन सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनों समूहों में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त 't ' का मान 1.86 है।

10.4 व्याख्या

318 df. पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि गणना

से प्राप्त 't' का मान 1.86 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है।

सारणी एवं सांख्यिकीय विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में हो रहे संवेगात्मक विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

11. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शहरी परिवेश के विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए शैक्षिक साधन आसानी से प्राप्त हो जाती है किन्तु ग्रामीण परिवेश के छात्रों को अच्छी शैक्षिक सुविधा प्राप्त नहीं हो पाती है। साथ ही साथ ग्रामीण परिवेश में अधिकांश पालक अशिक्षित होते है जिससे वे अपने बच्चों का उचित मार्गदर्शन नहीं कर पाते जबकि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को उनके माता–पिता का सहयोग या मार्गदर्शन अपेक्षाकृत बहुत अच्छा मिलता है जिससे उनके संवेगात्मक विकास ग्रामीणों की अपेक्षा ज्यादा अच्छे से होता है। बालक व बालिकाओं के संवेगात्मक विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इसका कारण है कि आज के परिवेश में सभी अभिभावक बालिकाओं के प्रति भी सजग है। आज वे समान स्तर पर बालक और बालिकाओं को सुविधा उपलब्ध करा रहे है।

12. सन्दर्भ ग्रंथ

1. आहुजा, राम – सोशल प्रोब्लम्स इन इंडिया, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2001.
2. ऐरिक और राबर्ट – सामान्य छात्रों के संवेगात्मक विकास और शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े बालक–बालिकाओं की सफलता और असफलता की परिकल्पनाओं का अध्ययन, 1988.
3. चौबे, एस.पी. – हिस्ट्री ऑफ इंडियन एजुकेशन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, 2003.
4. खातुन, रईसा – बच्चों के संवेगात्मक विकास में माता–पिता की भूमिका एक अध्ययन, International Journal of Advanced Academic Studies. 2020;2(3):85-87.
5. सिंह, शिव प्रकाश – भारत में 'सभी के लिये शिक्षा' अभियानः मिथक या वास्तविकता, प्रतियोगिता दर्पण, मासिक पत्रिका प्रकाशक एवं मुद्रक महेन्द्र जैन, 2007; आगरा, पृ0 1878–1879।
6. पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार – भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसारः दशा और दिशा, कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2007, वर्ष 53, अंक 11, पृ. 7–9.
7. पाठक, पी.डी – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2007.
8. झाझडिया, राजेन्द्र प्रसाद – माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का उनके व्यक्तित्व एवं समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, International Journal of Education and Science Research. 2015;2(4):28-34.